रॉबर्ट
गुलाब घोड़ा

जोआन हीलब्रोनर

चित्र: पी. डी. ईस्टमैन
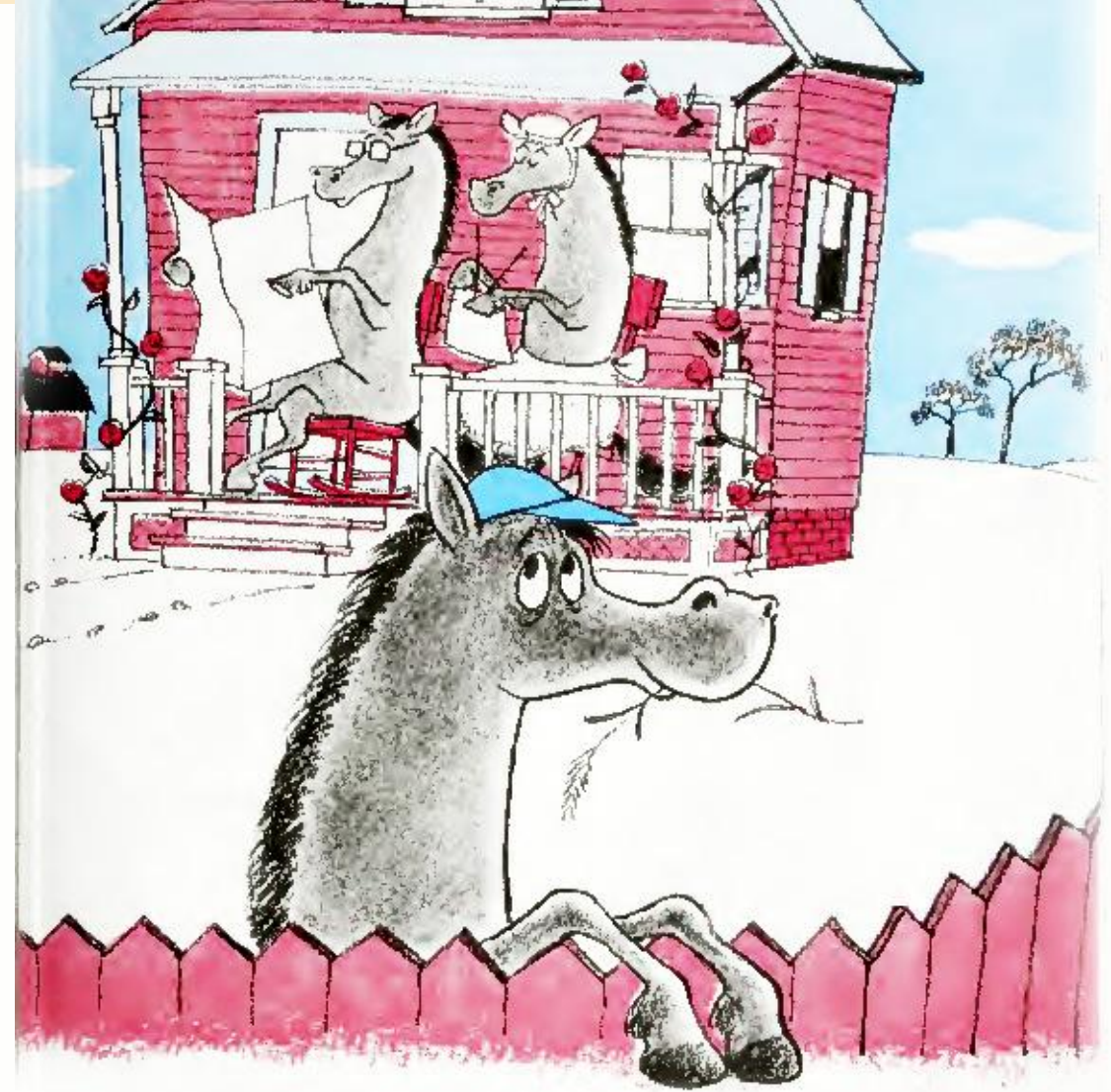
रॉबर्ट एक खुशमिजाज़ छोटा घोड़ा था.

वह एक फार्म पर रहता था.

वहां वो अपने माता-पिता के साथ रहता था.

एक दिन रॉबर्ट ने एक पार्टी रखी.

वो उसका जन्मदिन था.

फार्म के सभी दोस्त उस पार्टी में आए.
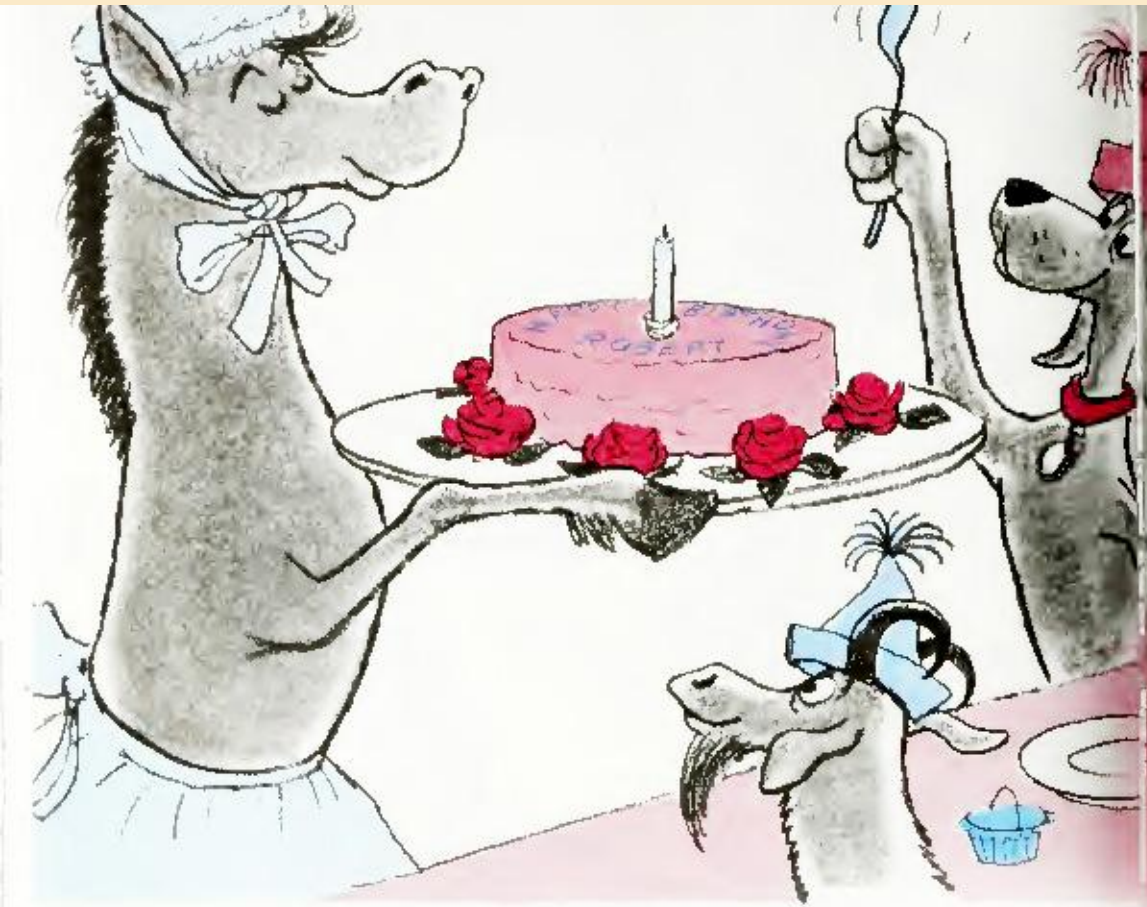
वो अपने साथ एक बड़ा केक लाए.

"जन्मदिन मुबारक हो, रॉबर्ट,"

उसके सभी दोस्तों ने कहा.

"तुम्हें जन्मदिन की सैकड़ों मुबारकबाद!"

केक बहुत सुंदर था.

उसके चारों ओर बड़े-बड़े लाल गुलाब सजे थे.

रॉबर्ट को वे लाल गुलाब बहुत पसंद आए.

उसने अपनी नाक सीधे एक गुलाब में डाली.

फिर उसने एक गहरी सांस ली.
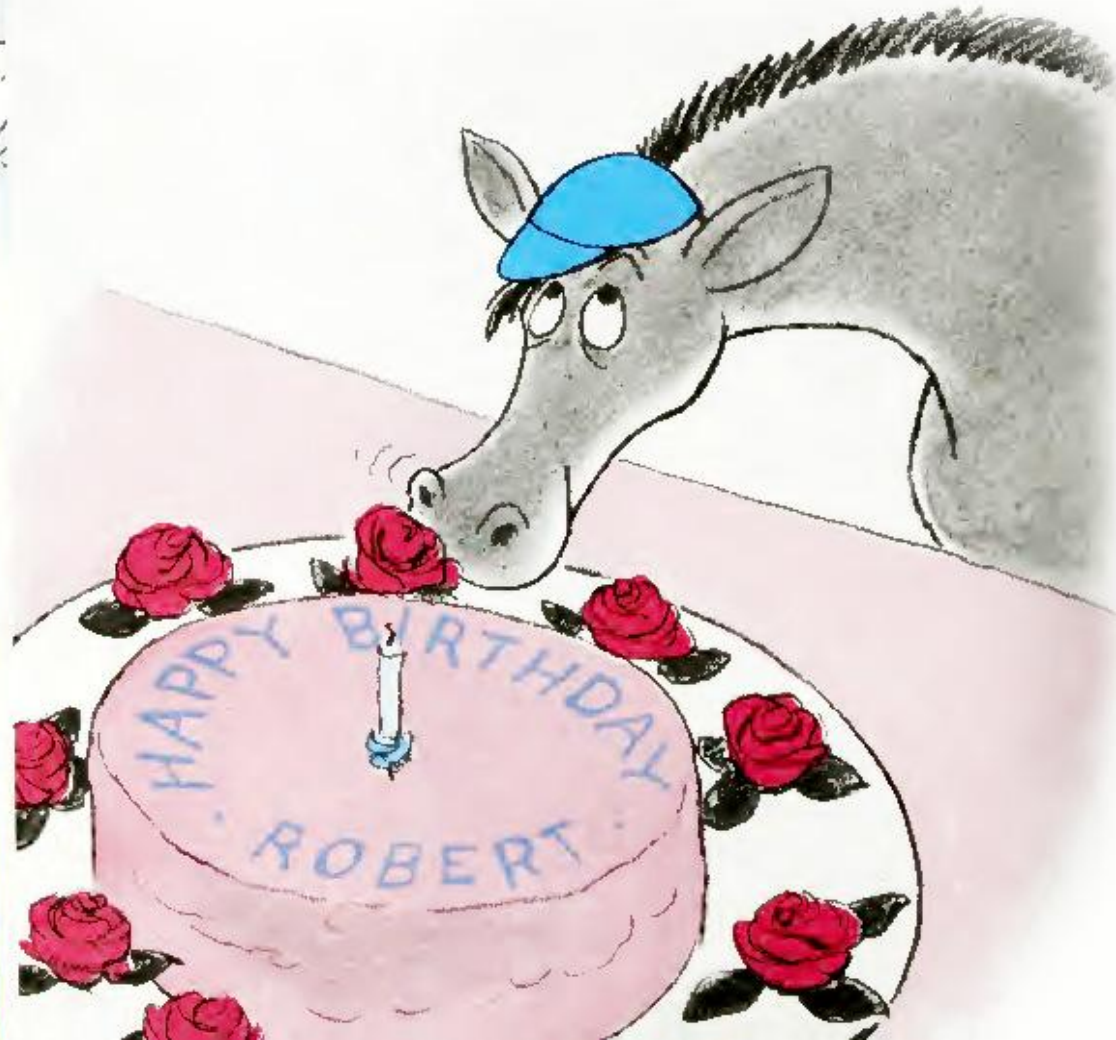
फिर रॉबर्ट को एक अजीब सा एहसास हुआ,

उसकी आँखों में खुजली होने लगी.

उसकी नाक में भी खुजली होने लगी.

और फिर. ..

"आच्छू!" रॉबर्ट ने छींका.

उसने बड़ी ज़ोर से छींका! क्या छींक थी!

उसके खेत के सारे दोस्त ऊपर उड़ गए.

केक भी ऊपर उड़ गया.

गुलाब भी ऊपर उड़ गए.

और रॉबर्ट खुद नीचे गिर गया.

उसकी माँ ने तुरंत डॉक्टर को बुलाया.

डॉक्टर ने रॉबर्ट को जांचा.

"मुंह खोल कर आह कहो," डॉक्टर ने कहा.

"आह!" रॉबर्ट ने कहा.

"आहा!" डॉक्टर ने कहा.

"मुझे पता चल गया कि तुम्हें छींक क्यों आई."

"मुझे अब सही पता चल गया," डॉक्टर ने कहा.

"तुम इधर आओ, रॉबर्ट.

और इन गुलाबों को सूँघो."
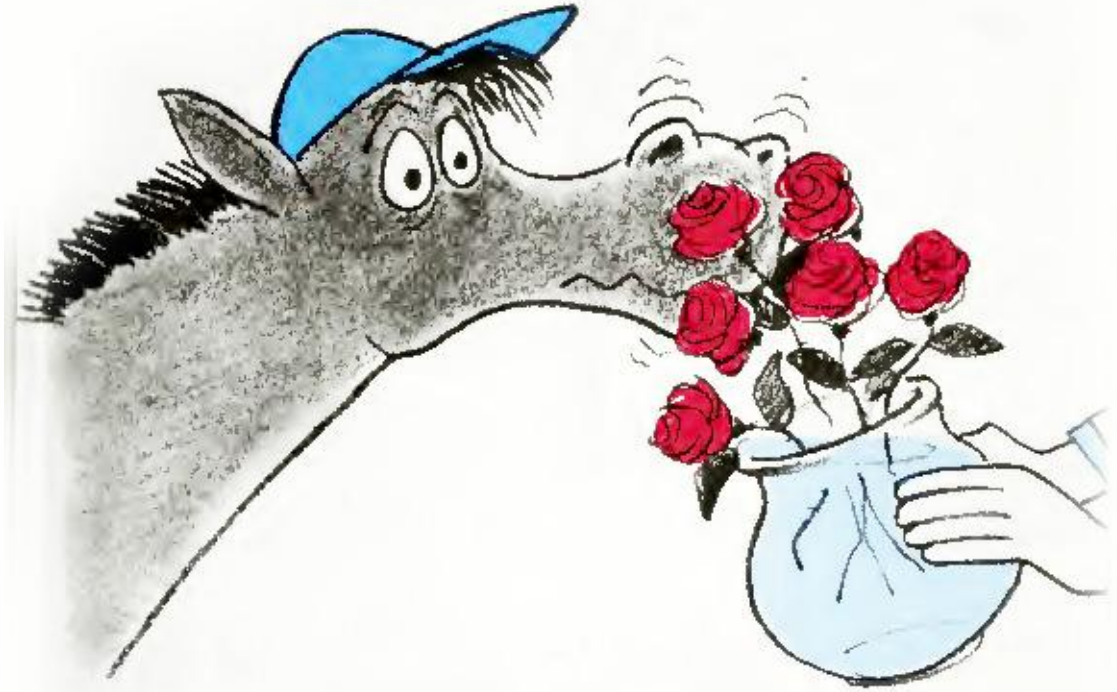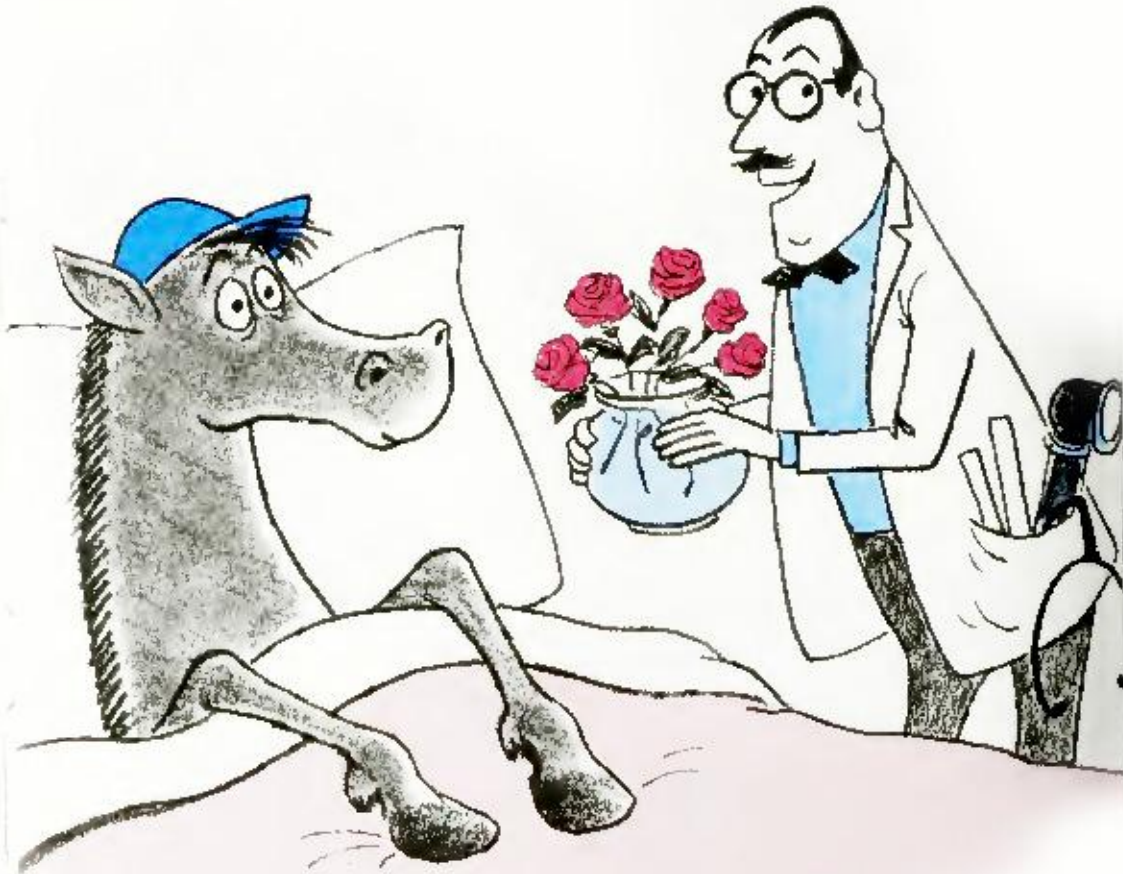
रॉबर्ट ने अपनी नाक उन गुलाबों में डाली.

उसने थोड़ा सूँघा.

फिर से उसकी नाक खुजलाने लगी.

फिर से उसकी आँखें खुजलाने लगीं.

"आच्छू!" रोबर्ट ने छींका!

उस धमाके से खिड़की हिली.

दरवाज़ा धड़ाम से खुला.

गुलाब ऊपर उड़ गए.

और डॉक्टर नीचे गिर पड़ा.

"मैं सही था," डॉक्टर ने कहा.

"गुलाब तुम्हारे लिए बहुत बुरे हैं.

देखो, इस फार्म पर बहुत सारे गुलाब हैं.

तुम्हें उनसे दूर रहना चाहिए.

अब तुम्हें शहर चले जाना चाहिए."

इसलिए रॉबर्ट को शहर जाना पड़ा.

"अलविदा," उसने अपने माता-पिता से कहा.

"मैं शहर में ठीक से रहूँगा.

मैं काम ढूँढ लूँगा. मैं कोई नौकरी ढूँढ लूँगा."

रॉबर्ट को शहर में नौकरी मिल गई.

वो एक दूधवाले के यहाँ काम करने लगा.

वह दूधवाले और उसकी गाड़ी को लेकर पूरे शहर में घूमता था.
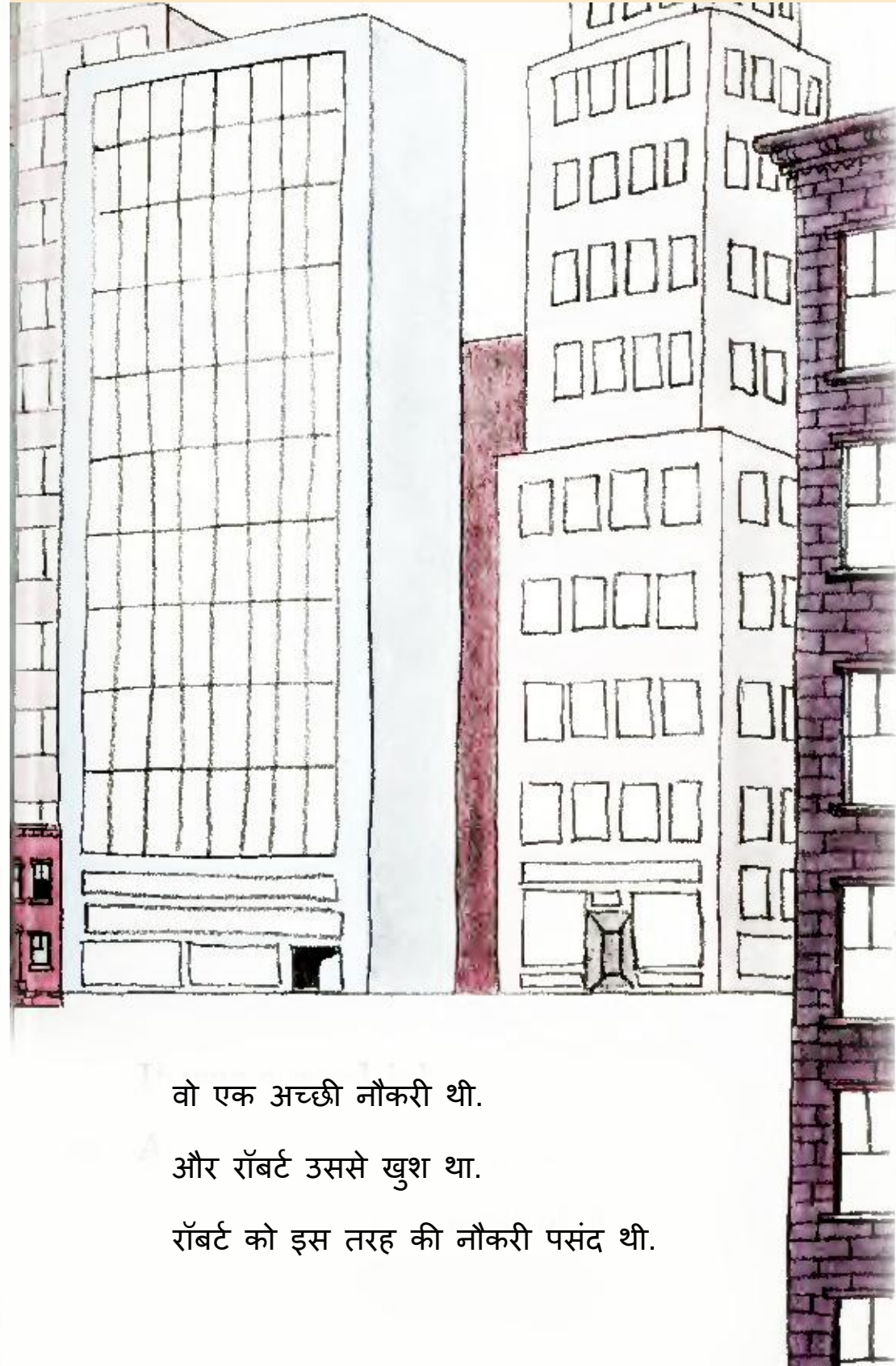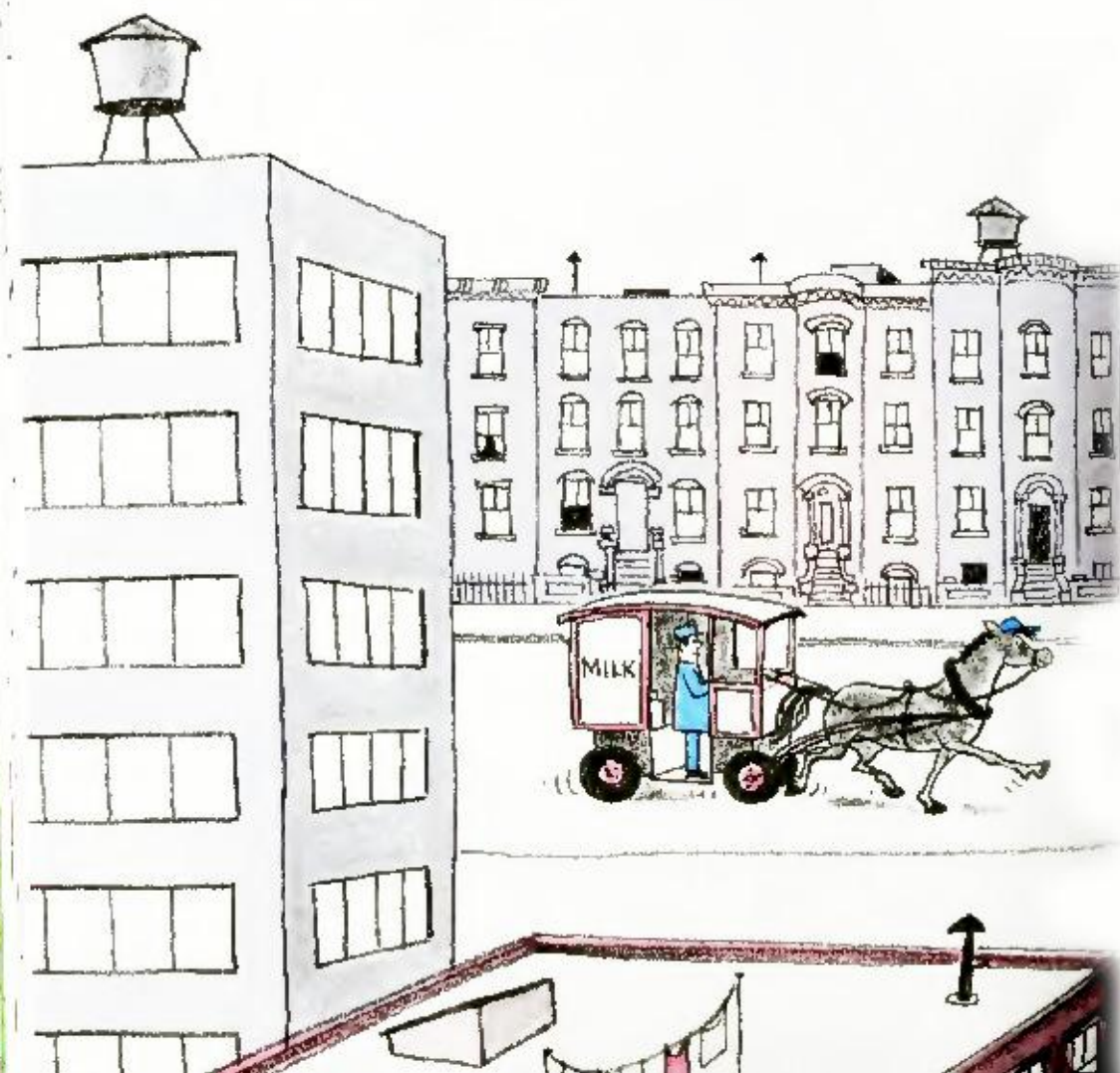
वो एक अच्छी नौकरी थी.

और रॉबर्ट उससे खुश था.

रॉबर्ट को इस तरह की नौकरी पसंद थी.
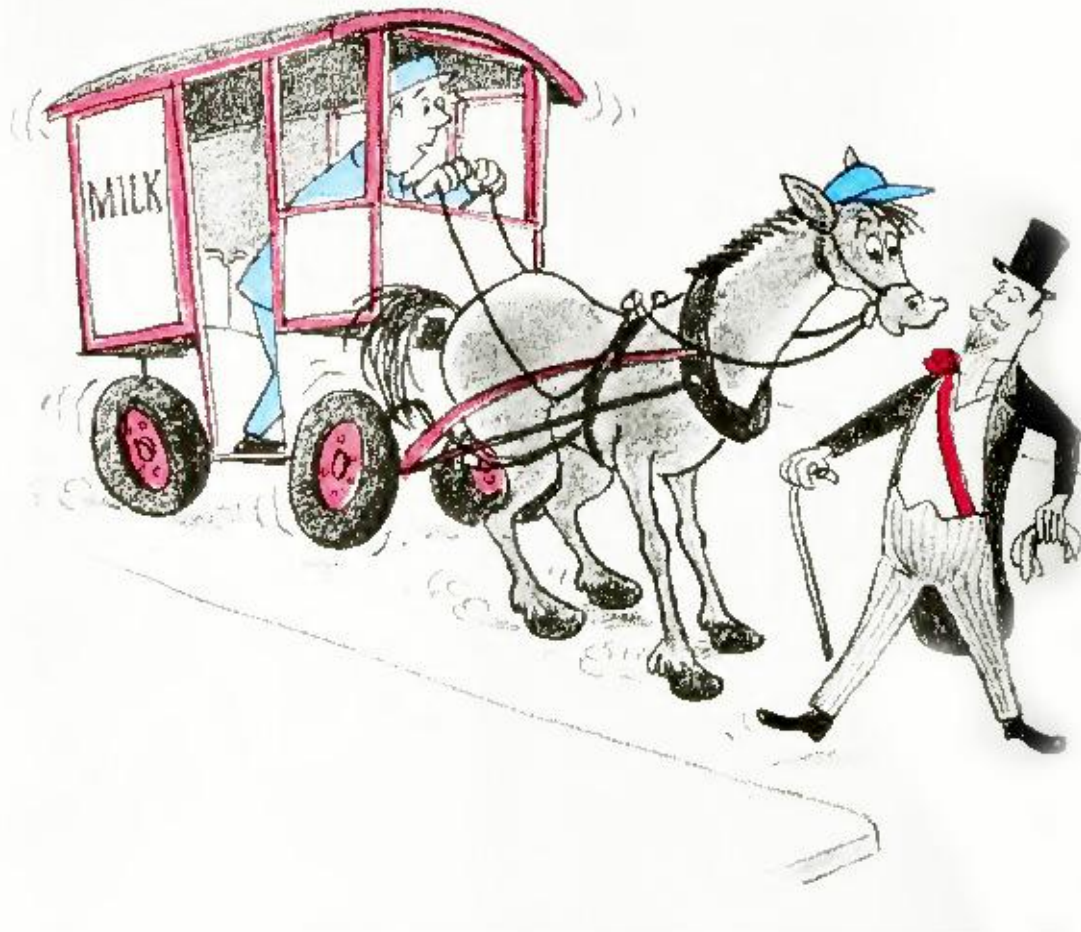
फिर एक दिन एक आदमी रॉबर्ट के ठीक बगल में आया.

उस आदमी के कोट में एक फूल था.

उसके कोट में जो फूल लगा था वो एक गुलाब था.

एक गुलाब!

और वो भी रोबर्ट की नाक के ठीक नीचे!

रॉबर्ट को फिर से वह अजीब सा एहसास हुआ.

उसकी नाक में खुजली होने लगी.

और उसकी आँखों में खुजली होने लगी.

और....

"चले जाओ!" दूधवाले ने रॉबर्ट से कहा.

"तुम मेरे लिए काम करने लायक नहीं हो."

"आच्छू!" रॉबर्ट छींका!

उससे गाड़ी क्रैश हो गई.

सारा दूध छलक कर बह गया.

दूधवाला ऊपर हवा में उड़ गया.

और गुलाब वाला आदमी ज़मीन पर नीचे गिर गया.
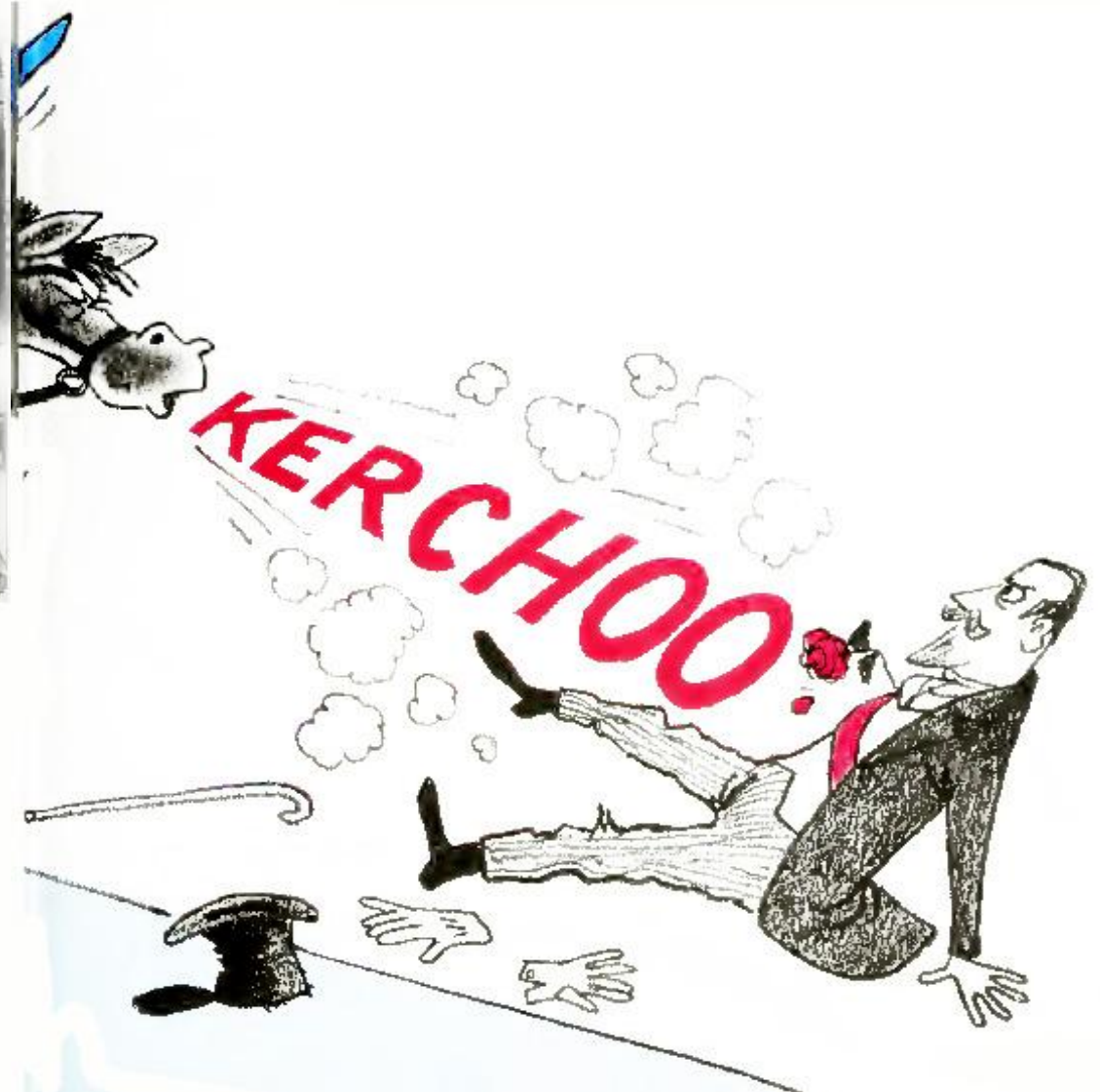
इसलिए रॉबर्ट को फिर से काम की तलाश शुरू करनी पड़ी.

लेकिन एक घोड़े के लिए काम पाना मुश्किल था.

उसने कई दिनों तक तलाश की.

एक दिन उसने कुछ घोड़े देखे.

उन पर लोग सवार थे.

"देखो! मैं भी यह काम कर सकता हूँ," रॉबर्ट ने कहा.

"मैं वो काम माँगूँगा."

रॉबर्ट दरवाज़े पर गया.

एक आदमी बाहर आया.

"तुम एक अच्छे घोड़े लगते हो,"

आदमी ने रॉबर्ट से कहा.

घोड़ा

चाहिए

"तुम मेरे लिए काम कर सकते हो.

लेकिन देखो तुम्हें कड़ी मेहनत करनी होगी.

तुम्हें वो सब करना होगा जो तुम्हें बताया जाएगा."
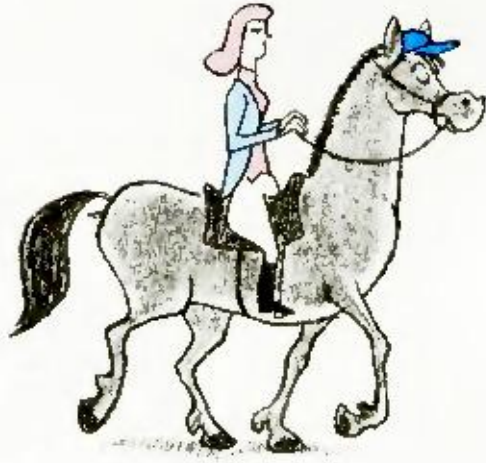
फिर रॉबर्ट काम पर लग गया.

उसने वैसा ही करता जैसा उसे बताया जाता.

जब उसे धीरे चलने को कहा जाता,

तो वह धीरे चलता.

जब उससे तेज़ चलने को कहा जाता,

तो वह तेज़ चलता.

रॉबर्ट वो सब करता जो उसे बताया जाता.

"मुझे यह काम पसंद है," रॉबर्ट ने कहा.

"और मैं इस नौकरी को कायम रखूँगा."

फिर एक दिन

रोबर्ट एक महिला को घुमाने ले गया.

सब कुछ ठीक चल रहा था.

तभी अचानक...
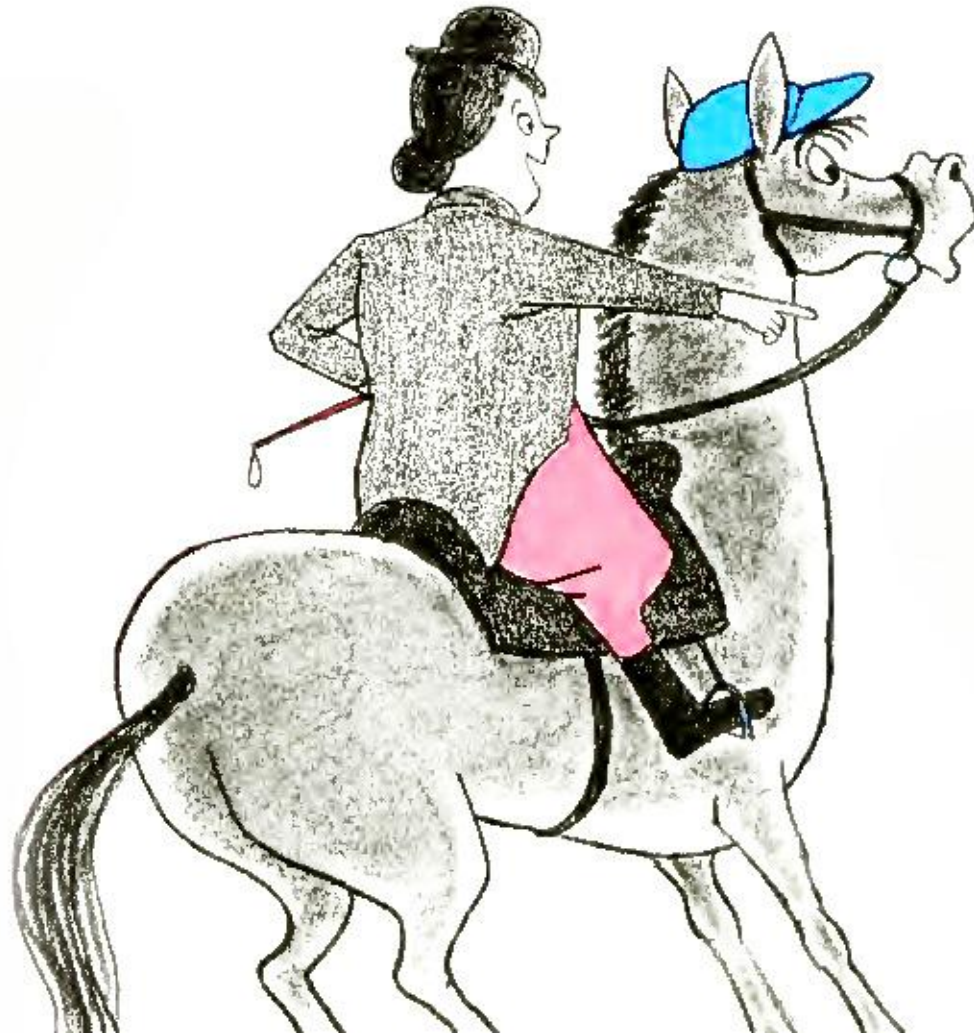
"देखो!" महिला ने कहा.

"ज़रा उन सुंदर गुलाबों को देखो.

मुझे वे गुलाब चाहिए.

रॉबर्ट, मुझे तुरंत वहाँ ले चलो."

बेचारा रॉबर्ट भला क्या कर सकता था?

उसे वही किया जो उसे बताया गया.

वह महिला को गुलाबों के पास ले गया.

फिर से, उसे वह अजीब सा एहसास हुआ.

उसकी नाक में खुजली होने लगी.

उसकी आँखें खुजली करने लगीं.

और....
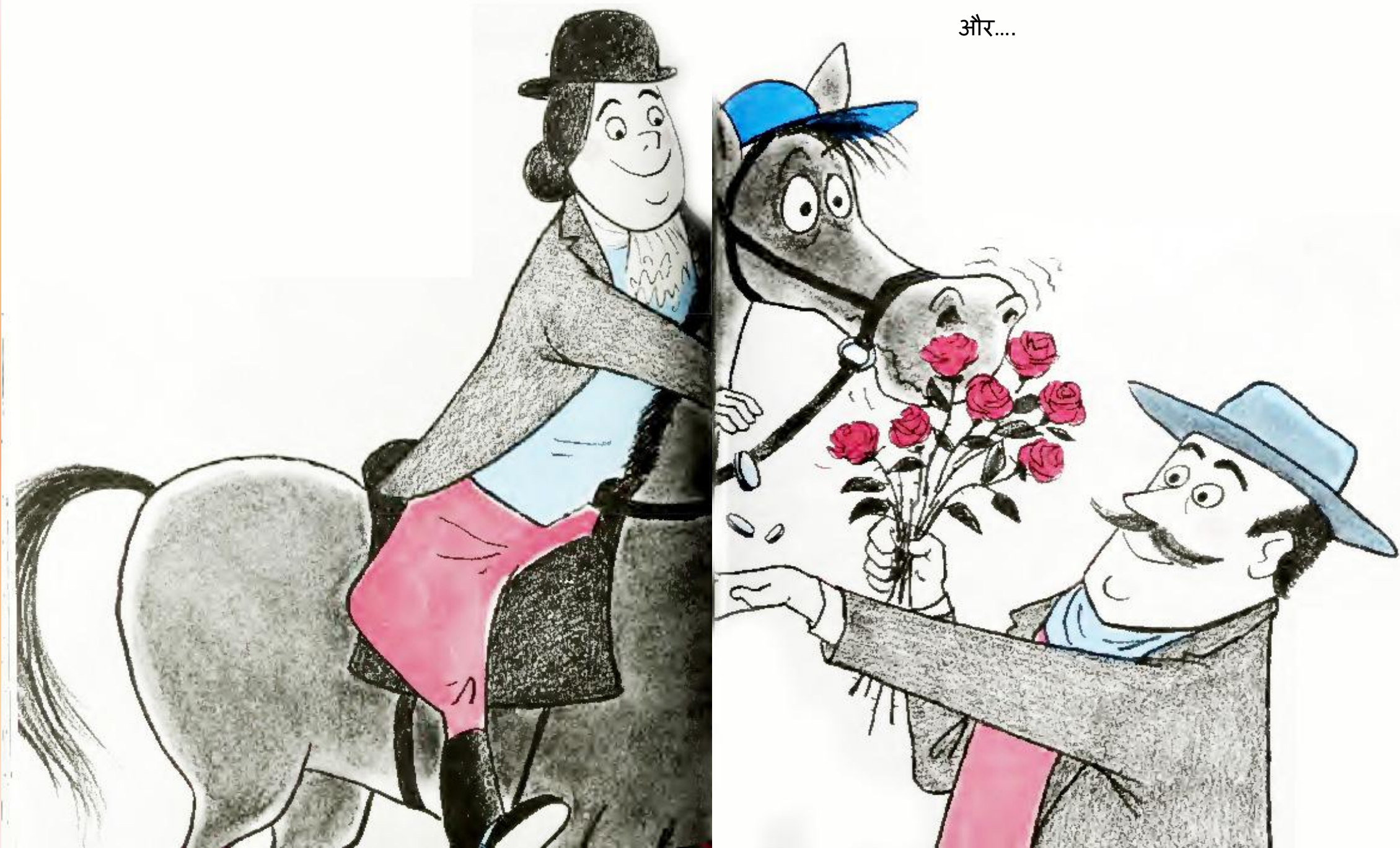
"आच्छू!" रॉबर्ट छींका!

उस छींका से गाड़ी उड़ गई.

फूल उड़ गए.

महिला भी ऊपर उड़ गई.

और फूलवाला नीचे गिर गया.
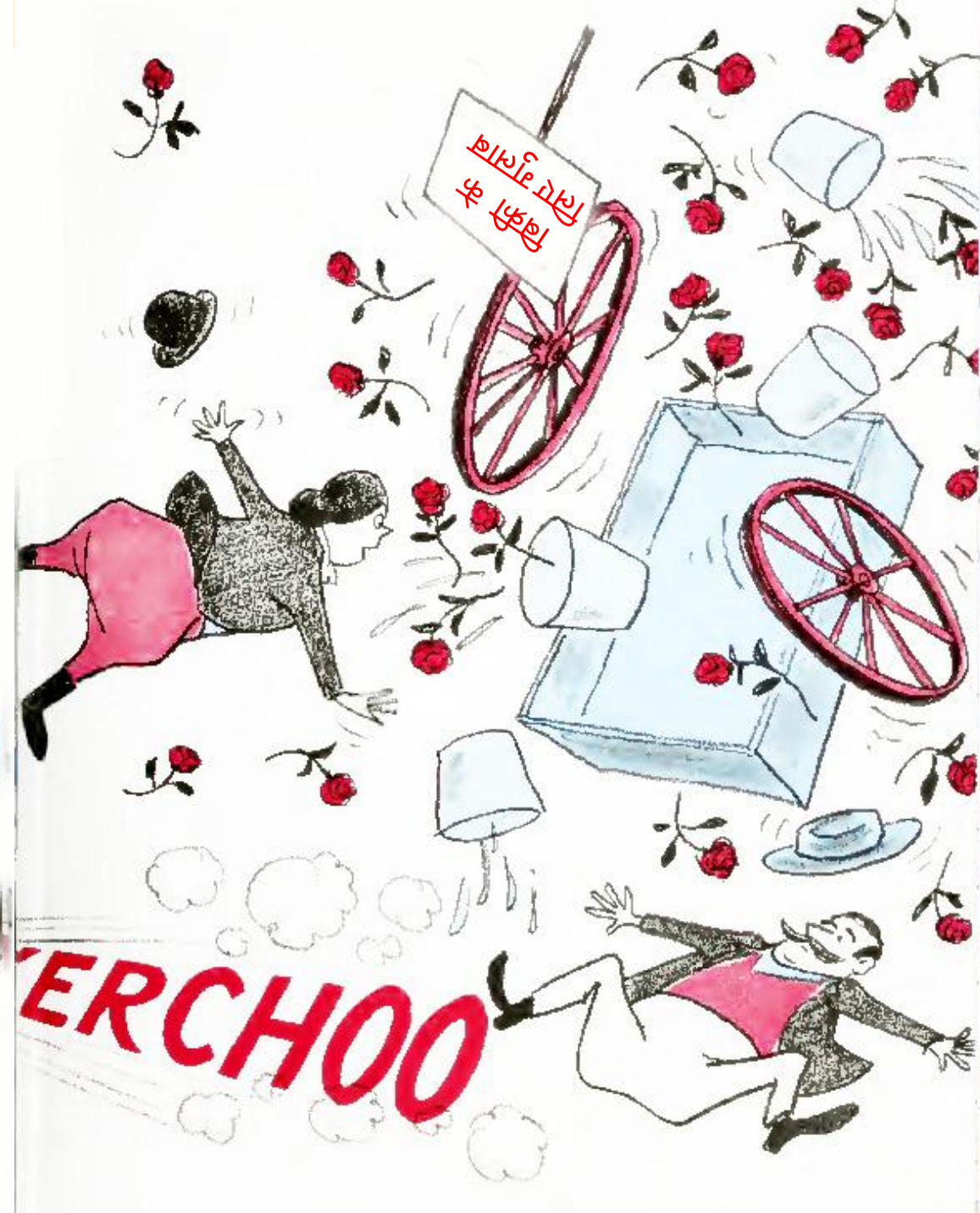
एक बार फिर रॉबर्ट

बेरोजगार हो गया.

रॉबर्ट को फिर से काम की तलाश करनी पड़ी.

उसने सब जगह देखा और खोजा.

सब जगह मर्दों के पास काम था.

और महिलाओं के पास भी काम था.

हर किसी के पास कोई न कोई काम था.

लेकिन घोड़े के लिए कोई काम नहीं था.
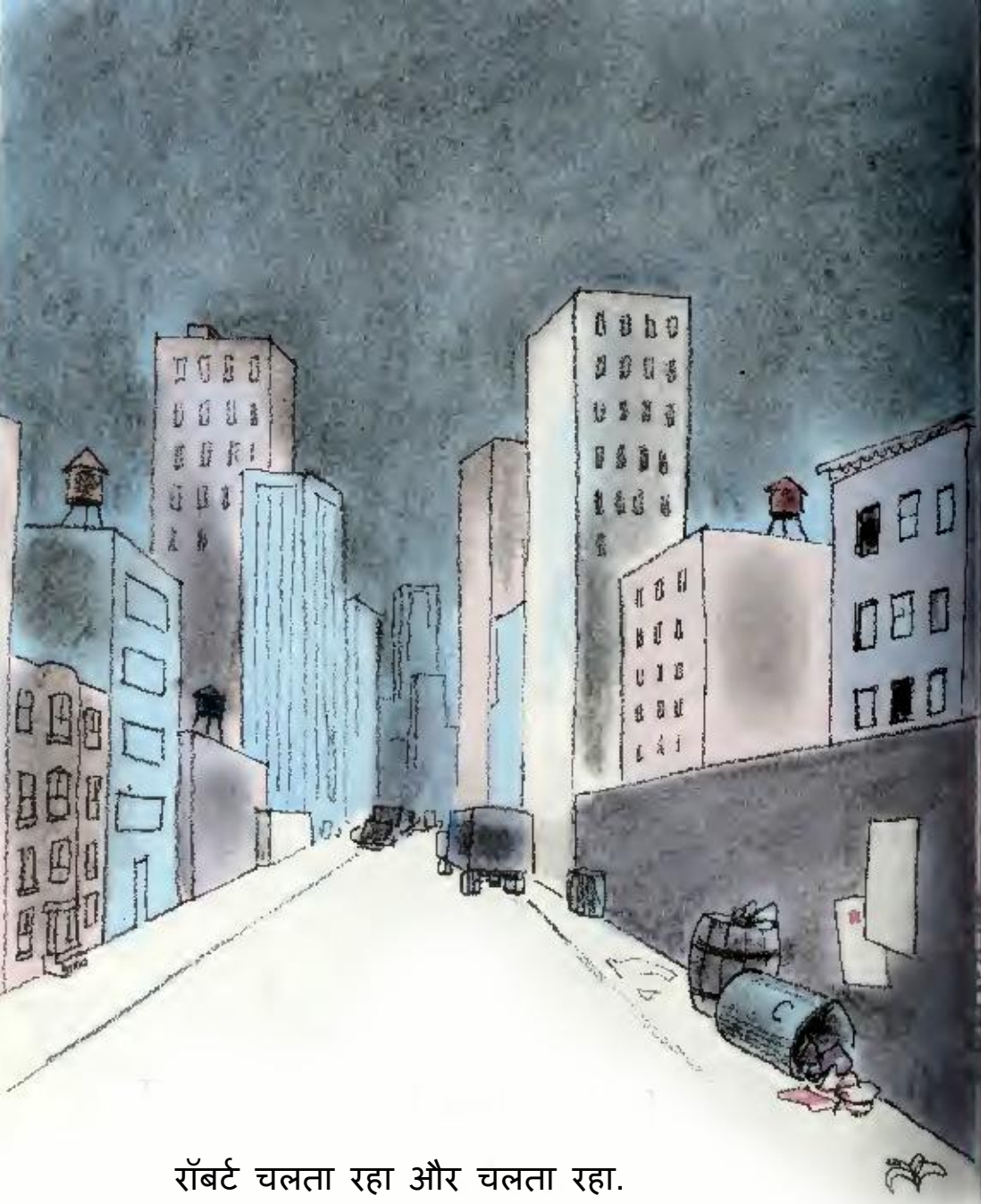
रॉबर्ट चलता रहा और चलता रहा.

उसने देखा और खोजा.

फिर आखिरकार रॉबर्ट को कुछ दिखाई दिया.

उसे एक काम दिखाई दिया

जो वह कर सकता था!

वह पुलिस का घोड़ा बन सकता था!

"मैं अंदर जाऊँगा.

मैं नौकरी माँगूँगा," रोबर्ट ने कहा.

जब रॉबर्ट बाहर आया

तो वो एक पुलिस घोड़ा था.
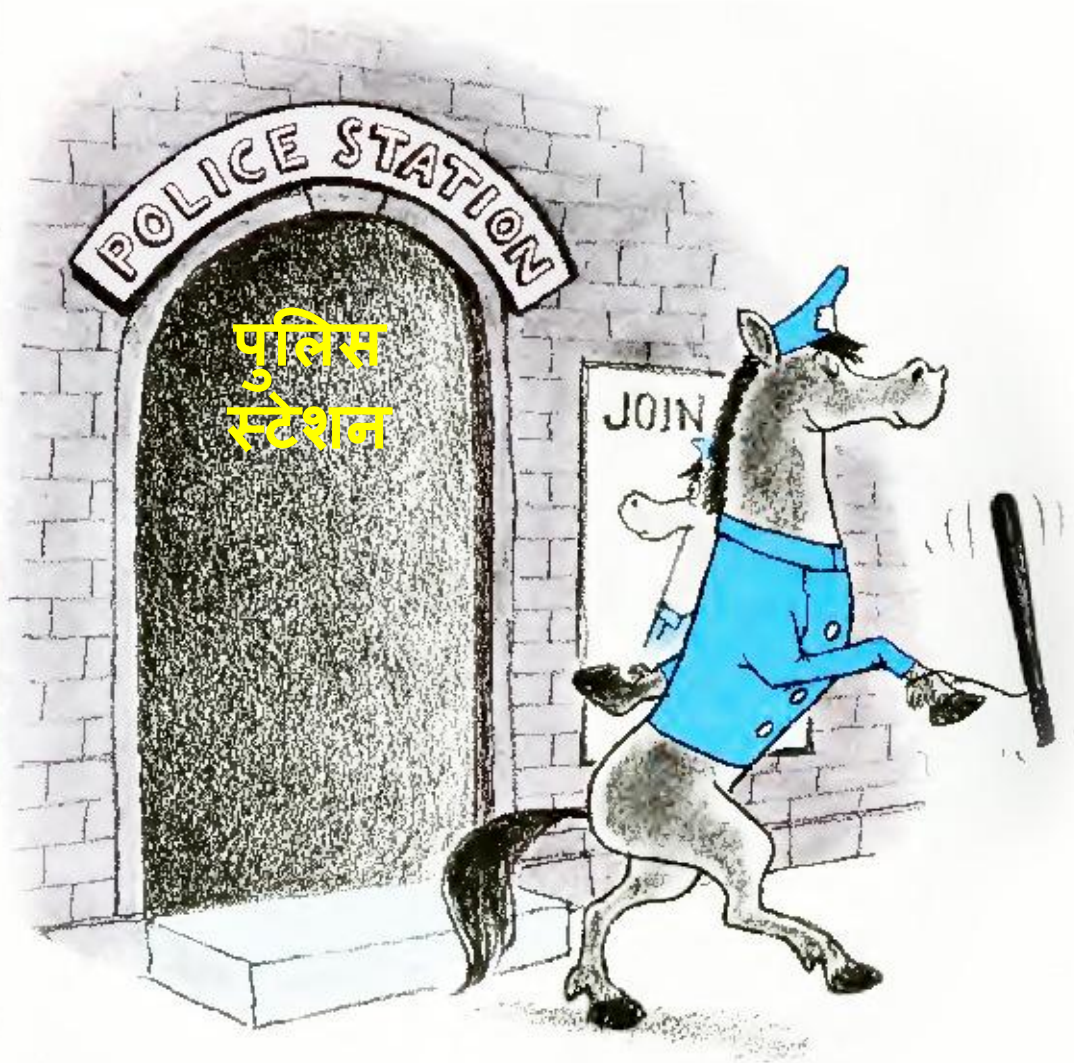
वह एक अच्छा पुलिस घोड़ा था.

वह सभी तरह के पुलिस काम करता था.

एक दिन रॉबर्ट बैंक स्ट्रीट पर काम कर रहा था.

तभी कुछ आदमी सड़क पर आए.

कुल तीन आदमी!

उनमें से एक के पास एक काला बैग था.

वे बैंक में घुसे.

रॉबर्ट ने उन्हें नहीं देखा.

फिर अचानक . . .

किसी ने आवाज़ लगाई:
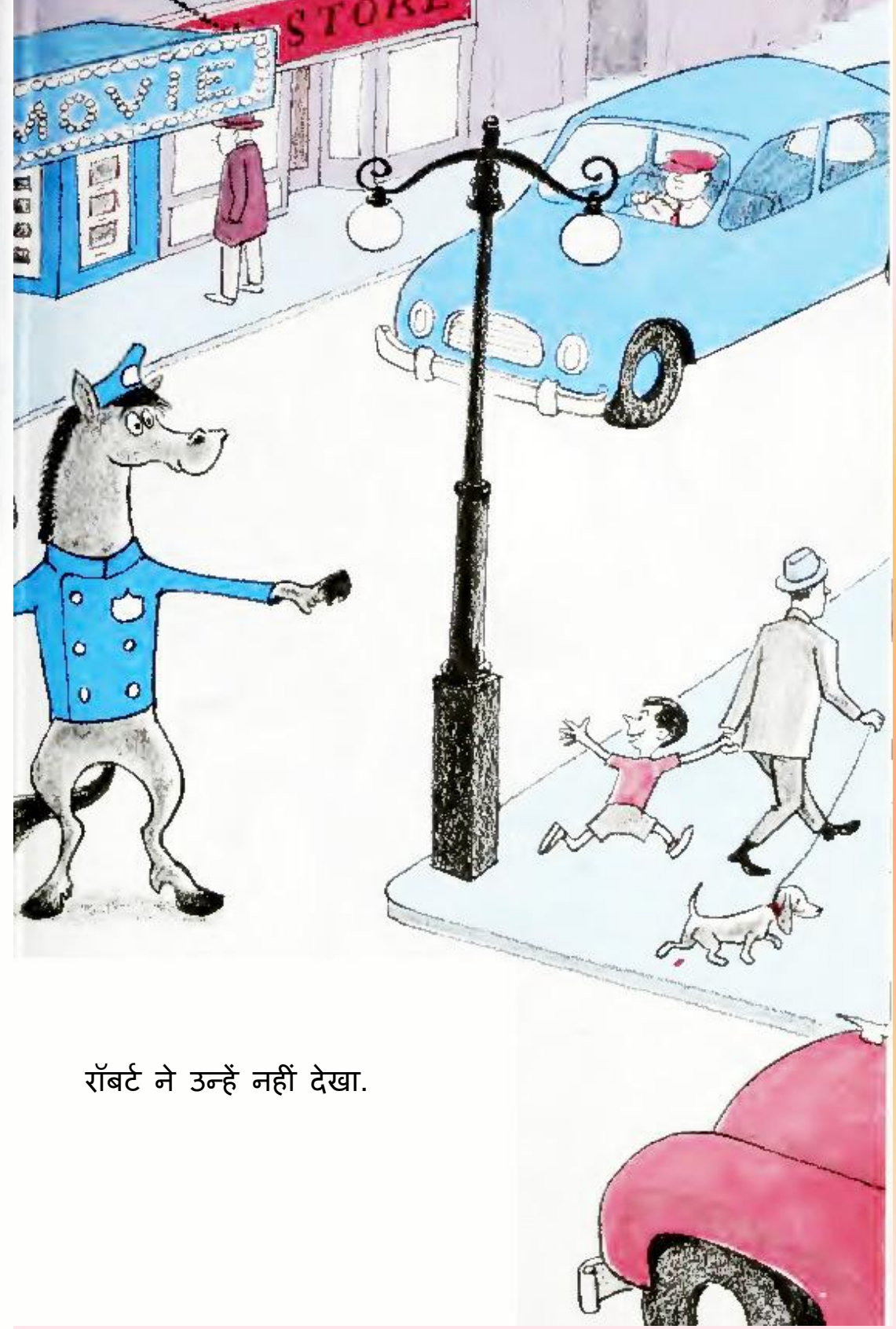
"मदद करो!

पुलिस! मदद करो!'

रॉबर्ट ने चारों ओर देखा.

फिर उसने उन तीन लोगों को देखा.

वे तीनों लुटेरे थे!

बैंक लुटेरे!

लुटेरे सीधे रॉबर्ट की ओर भागे.

वे सीधे उसके सामने से भागे.

वे भाग निकले.

रॉबर्ट तेजी से उठा!

वो उन लुटेरों को रोकना चाहता था!

लेकिन कैसे?

वह ऐसा कैसे कर सकता था?

और फिर . . .

रॉबर्ट ने एक गुलाब देखा!

वो कोई बड़ा गुलाब नहीं था.

लेकिन फिर भी वो एक गुलाब तो था!

रॉबर्ट सोचने लगा.

उसने बड़ी तेजी से सोचा.

रॉबर्ट उस गुलाब के पास गया.

फिर वो अपनी नाक

सीधे उस गुलाब के पास ले गया!

उसने एक सांस खींची.

एक बहुत बड़ी सांस!

और उसे फिर से वही

पुराना अजीब सा एहसास होने लगा.

उसकी आँखों में खुजली होने लगी.

उसकी नाक में खुजली होने लगी,

फिर....

रॉबर्ट को एक छींक आई.

इस तरह की छींक उसे कभी नहीं आई!

बिल्लियाँ दूर भाग गईं.

टोपियाँ दूर हवा में उड़ गईं.

कुत्ते ऊपर उड़ गए.

पक्षी नीचे आ गए.

बंदूकों ने धमाका किया.

काला बैग ऊपर उड़ गया.
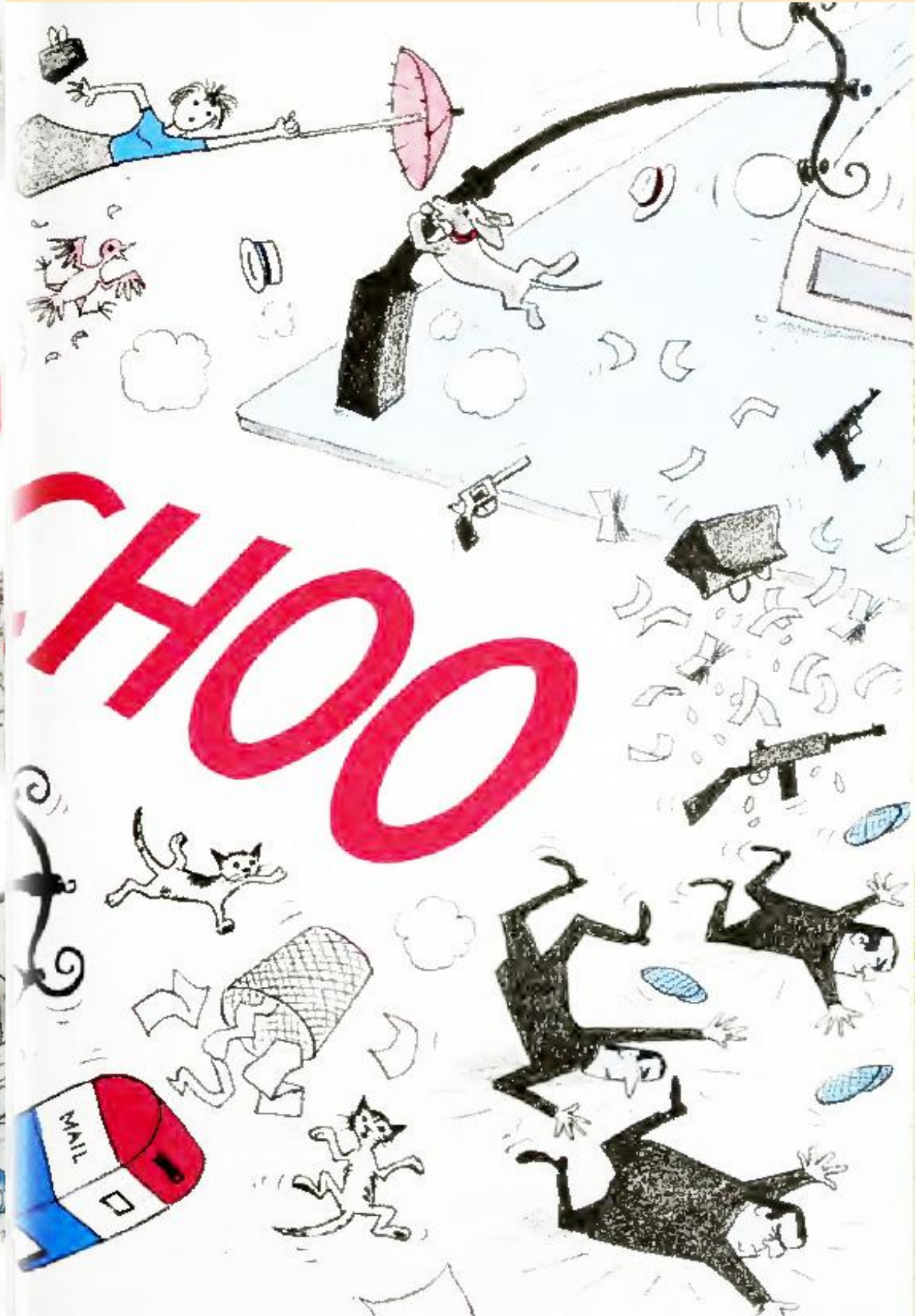
और लुटेरे ज़मीन पर गिर पड़े.

"हुर्रे! रॉबर्ट के लिए हुर्रे!"

हर कोई चिल्लाया.

बैंक वाले खुश थे.

पुलिसवाले खुश थे.

हर कोई खुश था.

रॉबर्ट ने लुटेरों को भागने से रोका था!

उसने लुटेरों को ज़मीन पर गिरा दिया था!
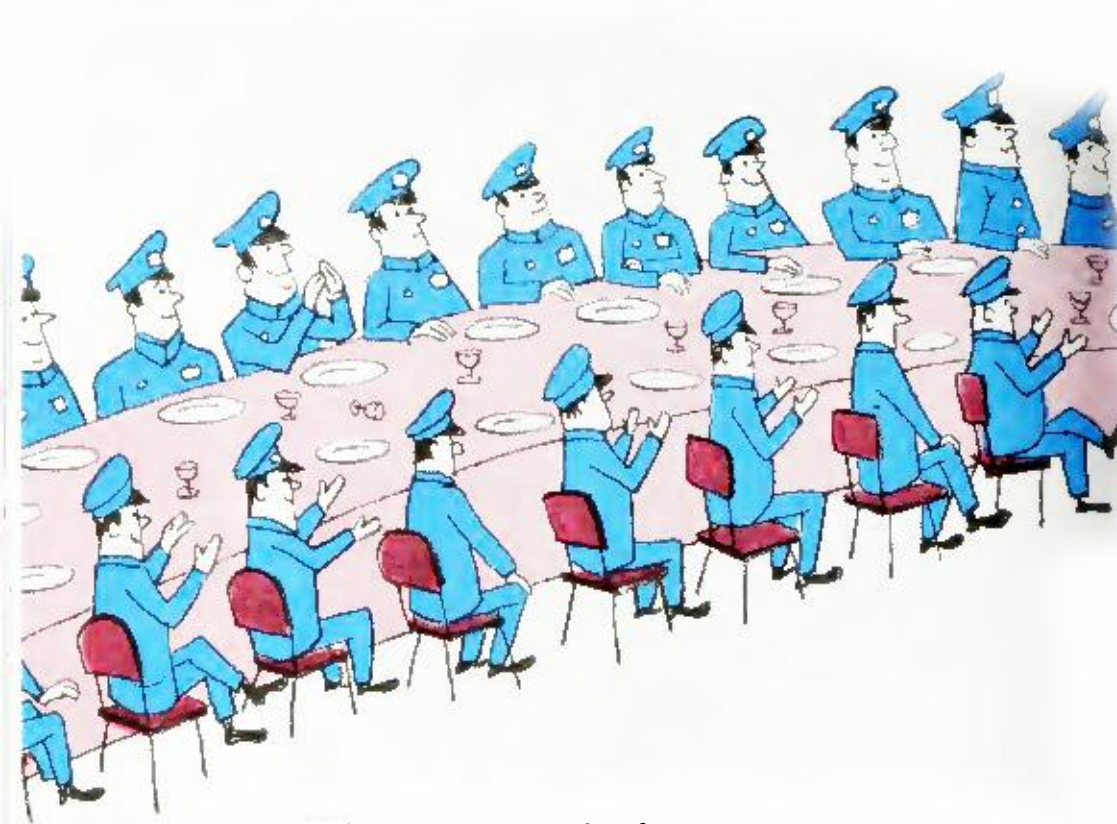
अगले दिन एक पार्टी हुई.

वो पार्टी रॉबर्ट के लिए थी.

पार्टी में उसके माता-पिता आए.

उसके फार्म के सभी दोस्त आए.

डॉक्टर भी आए.

सभी पुलिसवाले भी आए.

फिर उनमें से एक उठ खड़ा हुआ.

"रॉबर्ट," उसने कहा, "मेरे पास

तुम्हारे लिए कुछ है."
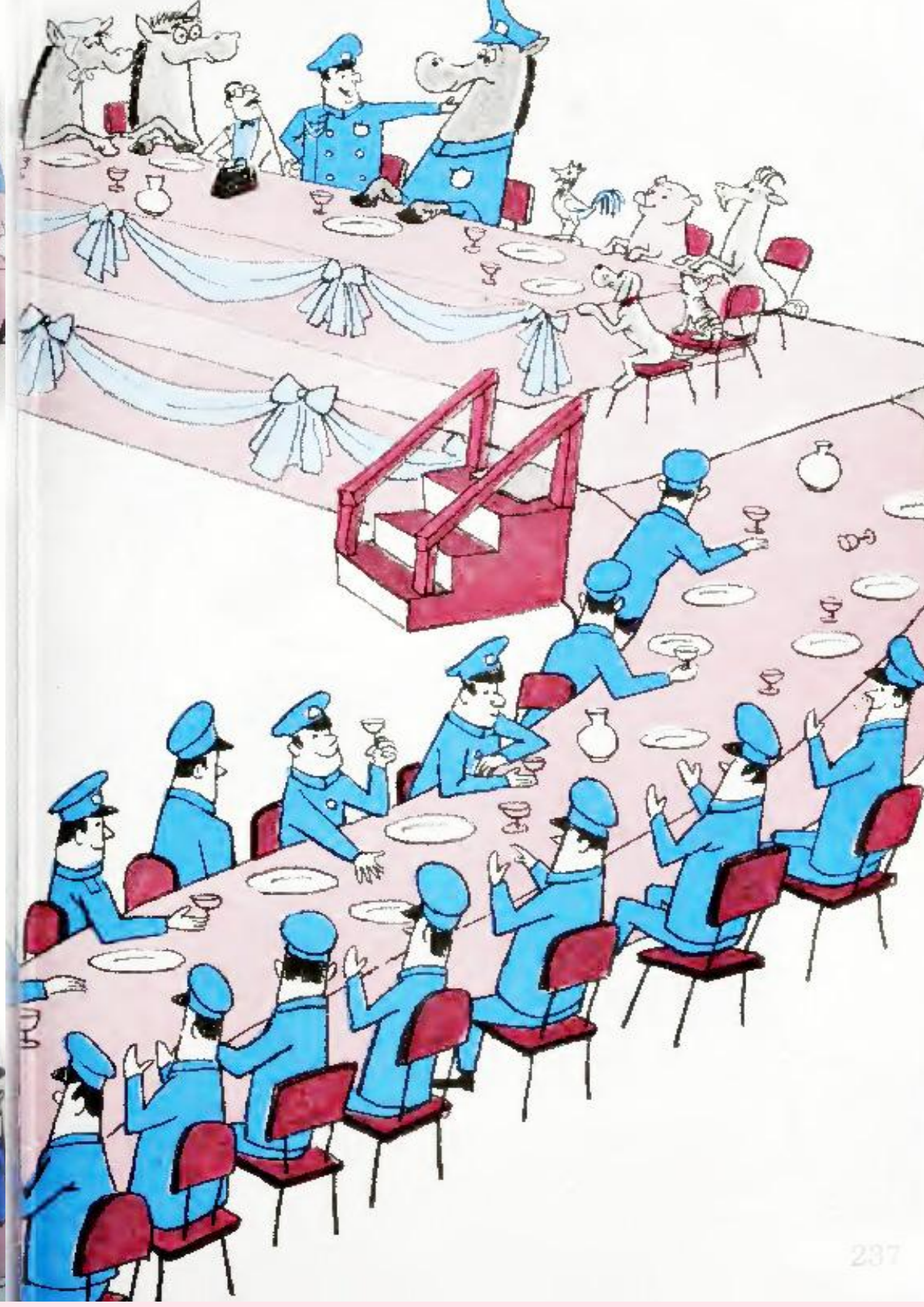
"गुलाब!" डॉक्टर चिल्लाया.

"अपनी टोपियाँ थामे रहो.

देखो, रोबर्ट को छींक आने वाली है!

रॉबर्ट हम सभी को छींककर, शिकागो भेज देगा!"

रॉबर्ट ने थोड़ा सूँघा.

उसकी नाक में खुजली नहीं हुई.

उसकी आँखों में भी खुजली नहीं हुई.

फिर रॉबर्ट ने बहुत ज़ोर से सूँघा.

इस बार उसे वह पुराना अजीब सा एहसास नहीं हुआ.

उस कोई छींक नहीं आई.

उसके बाद से गुलाबों से

रॉबर्ट को फिर कभी छींक नहीं आई.

अंत